मीडिया का साहित्य पर प्रभाव

उदय कुमार बी

सहायक प्राध्यापक, संत आग्नेस कालेज (स्वायत्त) मंगलूर.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263470

ABSTRACT:

साहित्य और मीडिया दोनों समाज के हर क्षेत्र में प्रमुख रूप में अपने महत्व को दिखाते हैं। जहाँ भावनाओं, विचारों और अनुभवों को महत्व देने में साहित्य है वहीं मीडिया उन विचारों को समाज तक पहुँचाने का कार्य करता है।

मीडिया के कारण ही साहित्य के प्रचार प्रसार गाँव गाँव और विश्व स्तर तक पहुँचा है। जिससे नया वातावरण का आविष्कार हो गया। सकारात्मक प्रभावों में साहित्य का प्रसार, महत्व बढ़ गया। शिक्षा के क्षेत्र में भी डिजिटल माध्यम से साहित्य के अध्ययन अध्यापन का काम आसान हो गया। हर क्षेत्र में एक न एक विचार में साहित्य और मीडिया का संबंध परस्पर सहयोगी, गतिशील और समाज के लिए अनिवार्य है।

KEYWORDS:

साहित्य और मीडिया, उनका प्रचार, संस्कृति, शिक्षा, सोशल मीडिया, साहित्यिक चेतना, सकारात्मक प्रभाव, नकारात्मक प्रभाव।

भूमिका:

"साहित्य" शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन के "लिटरेचर" शब्द से हुई जो "लिटेरा" से बना है, जिसका अर्थ है अक्षर। "अक्षरों से निर्मित लेखन" अन्य भाषाओं में विकसित होने के साथसाथ "ज्ञान" और विद्वत्ता जैसे व्यापक अर्थ भी ग्रहण करता गया। इसमें गद्य, पद्य, कहानियां, उपन्यास, कविताएं, नाटक, निबंध भी शामिल हैं। साहित्य को हम भाषा, देश,

विधा या विषय वस्तु के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकते है। साहित्य एक दर्पण जैसे होने के कारण हम समाज की भावनाएं, यथार्थ और विचारों को इसमें देख सकते हैं। आज साहित्य सिर्फ़ किताबों में ही नहीं, बल्कि टीवी, रेडियो, अख़बार, पत्रिकाएँ, सोशल मीडिया और डिजिटल साधनों पर भी मिलता है।

"मीडिया" शब्द 'माध्यम' का बहुवचन के रूप में है। "मीडिया" संचार साधन है, जो सूचना, विचार, संस्कृति और ज्ञान को जन साधारण तक पहुँचाने का कार्य करता है। संचार माध्यम के अंतर्गत हम टेलिविज़न, सिनेमा, समाचार पत्र आदि को देख सकते हैं। इसलिए समाज के विकास की दिशा में साहित्य और मीडिया दोनों का अपना अपना महत्व है। समाज में साहित्य केवल लिखित शब्द के रूप में न रहकर, सांस्कृतिक और बौद्धिक रूप में अपने महत्व को दर्शाता है। कथा, कविता, उपन्यास, नाटक, संस्मरण, आलोचना-इन सबके माध्यम से मनुष्य की अनुभूतियाँ व्यक्त होती हैं। साहित्य और मीडिया एक दूसरे के पूरक के रूप में है। साहित्य सामग्री देता है तो, मीडिया उसे मंच देता है। समाज में जागरूकता फैलाने में मीडिया का महत्व बढ़ता है तो साहित्य उसे गहराई तक ले जाती है। साहित्य का प्रचार प्रसार मीडिया के कारण हुआ है। साहित्य तो पहले सीमित वर्ग तक सीमित था, मगर मीडिया ने इसे गाँव कस्बों और वैश्विक स्तर तक पहुंचाने का काम किया। टीवी, सिनेमा और सोशल मीडिया के कारण लघुकथा, पटकथा, ब्लॉग लेखन, ई साहित्य जैसी नई विधाएँ उभरी हैं। मीडिया ने आम जनता की भाषा और शैली को साहित्य में स्थान दिलाया। आज अख़बारों और पत्रिकाओं के लेख भी साहित्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। मीडिया के कारण हिंदी साहित्य देश और विदेश में फैला है और हिंदी लेखकों को दुनिया भर में पहचान मिली है।

मीडिया में तुरंत असर की प्रवृत्ति होने के कारण जल्दी हम उसके प्रभाव में पड़ते हैं। साहित्य तो गहराई और चिंतन का क्षेत्र है। लोकप्रियता ने साहित्य की गुणवत्ता को प्रभावित किया है। युवा पीढ़ी में पठन पाठन की नई आदतें विकसित हो रही हैं। ऑनलाइन मंचों पर कविता, कहानी और आलोचना के नए अवसर उपलब्ध हैं। क्षेत्रीय भाषाओं और लोक साहित्य को वैश्विक पहचान मिल रही है। उपन्यासों पर आधारित टीवी धारावाहिक ने साहित्य को घरघर पहुँचाया है। समकालीन कविदल

सोशल मीडिया पर कवि सम्मेलन आयोजित कर रहे हैं।

साहित्य और मीडिया का संबंध परस्पर सहयोगी और गतिशील है। जहाँ साहित्य मानव की संवेदनाओं को गहराई देता है, वहीं मीडिया उन संवेदनाओं को समाज तक पहुँचाने का कार्य करता है। मीडिया ने आम जनता की भाषा और शैली को साहित्य में स्थान दिलाया।

मीडिया का साहित्य पर सकारात्मक प्रभाव:

साहित्य का प्रचार प्रसार मीडिया के कारण अच्छे ढंग से चल रहा है। पहले तो सिर्फ पुस्तक पत्रिकाओं तक साहित्य का प्रचार प्रसार सीमित था। मीडिया के कारण साहित्य का प्रचार प्रसार गाँव गाँव, घर घर तक पहुँचा है। अब एक कविता, कहानी या लेख लाखों लोगों तक तुरंत पहुँच सकता है। लोगों में साहित्य में रुचि बढ़ने लगी। छोटे बच्चे, युवा पीढ़ी भी पौराणिक कथाओं में रुचि देने लगे। साहित्यकारों को तुरंत लोकप्रिय बनाने में मीडिया सहायक बना है। युवा लेखक और कवि आत्मविश्वास के साथ समाज के सामने आ रहे हैं। पहले तो सिर्फ उनकी सीमा पुस्तक तक थी। मीडिया के कारण साहित्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पाठकों तक पहुँचा है। समाज में साहित्यिक चेतना फैलाने में भी मीडिया की बड़ी देन है। स्त्रीविमर्श, दलित साहित्य, पर्यावरणीय साहित्य और समकालीन समस्याओं पर आधारित रचनाएँ अधिक लोगों तक पहुँच रही हैं, जो पहले सीमित थी। मीडिया समाज सुधार का सशक्त साधन बन गया है। कवि सम्मेलन, पुस्तक विमोचन, साहित्यिक चर्चाएँ और उत्सव अब टीवी और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर प्रसारित होने लगे हैं। लोग आजकल कहीं भी बैठकर मीडिया के कारण मनोरंजन अपनाते हैं। उनमें साहित्य की रुचि बढ़ गई है। इससे नए पाठक वर्ग तैयार हो रहे हैं।

नई पीढ़ी, जो किताबों से दूर जा रही थी, अब फिर से साहित्य से जुड़ रही है। सोशल मीडिया ने लेखक और पाठक के बीच की दूरी को कम कर दी है। मीडिया के कारण ही पाठक तुरंत प्रतिक्रिया दे सकते हैं और लेखक सीधे संवाद कर सकता है। भारतीय साहित्य को विश्व स्तर पर पहचान मिल रही है और विदेशी साहित्य भारतीय पाठकों तक पहुँच रहा है। आज सोशल मीडिया एक साहित्य प्रचारक का कार्य कर रहा है। साहित्य का विस्तार साहित्य जगत के लिए कल्याणकारी है।

मीडिया का साहित्य पर नकारात्मक प्रभाव:

साहित्य का काम गहन चिंतन और मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त करना होता है। मीडिया अक्सर तात्कालिक, सनसनीखेज़ और सतही विषयों को बढ़ावा देता है। परिणाम स्वरूप गंभीर सामग्री कम लोकप्रिय होती है। लोग गहरी साहित्यिक कृतियों से दूर रहकर मनोरंजन परक लेखन पाठन को महत्व देने लगे। मोबाइल, इंटरनेट और त्वरित समाचारों ने गहन पठन की आदत को कम किया है। शुद्ध हिंदी या क्षेत्रीय भाषाओं का स्थान मिश्रित भाषाएँ ले रही हैं। साहित्य समाज को नैतिकता, आदर्श और मूल्य प्रदान करता है। परंतु मीडिया की अति आकर्षण से यह गंभीरता पीछे छूट जाती है। मीडिया सिर्फ़ उन्हीं साहित्यकारों को प्रचारित करता है जो चर्चित और लोकप्रिय हैं। कई महत्वपूर्ण और गंभीर लेखक रचनाएँ पीछे रह जाती हैं। सोशल मीडिया पर साहित्य को छोटे छोटे हिस्सों में प्रस्तुत करने से साहित्य की संपूर्णता और गहराई खो जाती है। सोशल मीडिया का असर बस नकारात्मक ही नहीं है। ट्विटर जैसे मंचों की शब्द सीमा ने अपनी बात को चुस्त और कम से कम शब्दों में कहने के अभ्यास को संभव बनाया है। जब ईमेल आया तो कहा गया कि पत्र लिखना ही समाप्त हो जाएगा। वह तो नहीं हुआ, लेकिन हाथ या टाइपराइटर से पत्र लिखने का चलन जरूर खत्म हो गया। सोशल मीडिया ने पत्रकारिता और सूचना उपभोग के परिदृश्य को बदल दिया है। अब समाचार वास्तविक समय में प्रसारित होते हैं, और उपयोगकर्ता दुनिया भर के विविध दृष्टिकोणों तक पहुँच सकते हैं।

शिक्षा में साहित्य और मीडिया की भूमिका:

मीडिया ने शिक्षा के क्षेत्र में साहित्य को पढ़ने पढ़ाने की प्रक्रिया को सरल और आकर्षक बनाया है। स्कूल और कॉलेजों में साहित्य पढ़ाने के लिए अब ईकंटेंट, वीडियो लेक्चर और डिजिटल लाइब्रेरी का सहारा लिया जाता है। छात्र केवल पुस्तकालय तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे ऑनलाइन जर्नल, ऑडियोबुक्स और वीडियो व्याख्यान से भी साहित्य समझ सकते हैं। शिक्षण संस्थान भी सोशल मीडिया और वेबसाइटों के माध्यम से साहित्यिक प्रतियोगिताएँ, कवितापाठ और लेखन प्रतियोगिता आयोजित कर रहे हैं। इतिहास एवं आध्यात्मिक बौद्धिक कथाओं का ज्ञान आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। हमारे प्रमाणिक ग्रंथों की सम्पूर्ण

जानकारी आसान से हम प्राप्त और ग्रहण कर सकते हैं। सोशल मीडिया पर जो रचनाएं प्रकाशित हैं, जिससे छात्रों में पढ़ने की रुचि, पठन पाठन की ओर बढ़ रहा है जो साहित्य की समृद्धि में सहायक है। छात्रों को अपनी सभ्यता, संस्कृति और मूल्यों, परंपराओं आदि का ज्ञान भी उन्हें सोशल मीडिया के माध्यम से आसानी से ही प्राप्त हो सकता है। परोक्ष रूप से ही सही अपने भारत का, विश्व का, विश्व की सभ्यता, संस्कृति, मूल्यआदर्शों की जानकारी हासिल कर सकते हैं।

छात्रों के मन में सामाजिक चेतना, नैतिकता, एवं धार्मिक मूल्य तथा मानवीय चरित्र का परिवर्तन करता है। विश्व बंधुत्व, वैश्विक शांति की स्थापना को बल देता है। मानवीय मूल्यों का प्रचार प्रसार कर भी पा सकते हैं। सोशल मीडिया पर पंचतंत्र हितोपदेश के द्वारा प्रकृति एवं जीव संरक्षण पर लघु फिल्म नाटिका, कार्टून फिल्म आदि के द्वारा छोटे बच्चों के मन में प्रकृति प्रेम, प्रकृति संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, प्रत्येक प्रकार के प्रदूषण को रोकने के उपाय जैसे कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर सूचना प्रदान की जा सकती है। जिससे कि वह भविष्य में इन सब के प्रति जागरुक नागरिक बनकर व्यवहार कर सकें। सोशल मीडिया शैक्षिक वातावरण में तेज़ी से एकीकृत हो रहा है, जिससे सीखने और सहयोग के नए अवसर मिल रहे हैं। यूट्यूब और लिंक्डइन लर्निंग जैसे प्लेटफ़ॉर्म शैक्षिक सामग्री और व्यावसायिक विकास संसाधनों तक पहुँच प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष:

आज तो सोशल मीडिया हर एक के लिए एक जरूरत बन चुका है। साहित्यकार अपना सभी कार्य सोशल मीडिया के विभिन्न आयामों में करते हैं, करते आ रहे हैं, और करते रहेंगे, और करते रहना ही पड़ेगा क्योंकि यदि समाज में साथ रहना है तो उसकी गति के अनुसार ही चलना होगा। आजकल सोशल मीडिया के बिना गुजारा कर पाना असंभव है। सोशल मीडिया साहित्य के सृजन और प्रचार प्रसार तथा संरक्षण के लिए जो भूमिका निभा सकता है वह दूसरा कोई नहीं कर सकता। साहित्य के संरक्षण के लिए सोशल मीडिया प्राणवायु के समान है। साहित्य और मीडिया का संबंध परस्पर सहयोगी और गतिशील है। दोनों ही समाज के सांस्कृतिक स्तंभ के रूप में है। साहित्य जहाँ आत्मा है, वहीं मीडिया उसका शरीर है। भावनाओं और विचारों को जन्म देने का

काम अगर साहित्य करता है, तो मीडिया उन विचारों को समाज तक पहुँचाकर सामूहिक चेतना का निर्माण करता है। सूचना और तकनीक के युग के होने के कारण, साहित्य और मीडिया का सहयोग आजकल अनिवार्य है। साहित्य की गहराई में मीडिया गति प्रदान देता है। मीडिया ने साहित्य को नया आयाम दिया है, लेकिन साहित्यकारों को साहित्य को व्यावसायीकरण से बचाकर साहित्य की मूल आत्मा को संरक्षित करना है। अंततः कहा जा सकता है कि मीडिया साहित्य को गति देता है, और साहित्य मीडिया को गहराई। दोनों मिलकर समाज में चिंतन, जागरूकता और सांस्कृतिक समृद्धि लाते हैं। यदि मीडिया न होता तो साहित्य केवल पुस्तकालयों और सीमित पाठकों तक ही सीमित रहता। आज साहित्य जनजन तक पहुँचने का माध्यम बन गया है, और इसका सबसे बड़ा श्रेय मीडिया को जाता है। अंततः कहा जा सकता है कि मीडिया साहित्य को गति देता है, और साहित्य मीडिया को गहराई। दोनों मिलकर समाज में चिंतन, जागरूकता और सांस्कृतिक समृद्धि लाते हैं।

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.